Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

महावीर प्रसाद द्विवेदी व उनका युग

डॉ0 राजेश कुमार मिश्र
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,
मर्यादा देवी कन्या पी0जी0 कालेज,
बिरगापुर, हनुमानगंज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 3 Issue 5
Page Number: 01-05
Publication Issue :
September-October-2020

Article History
Accepted : 01 Sep 2020
Published : 07 Sep 2020

सारांश :– भारतेन्दु जी की मृत्यु के 15 वर्ष बाद तक साहित्य में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं दिख रहा था भारतेन्दु जी की मान्यताएं, उनकी मर्यादा से अलग किसी धारा का विकास होता नहीं दिख रहा था। 1903 तक उन्हीं की मान्यता को स्वीकार करके साहित्य सृजन हो रहा था। सरस्वती का प्रकाशन (1900–1903) तक हुआ पर, कोई परिवर्तन नहीं दिखा। 1903 में महावीर प्रसाद द्विवेदी जब सरस्वती पत्रिका के सम्पादक बने तब साहित्यिक मान्यताएँ धीरे–धीरे बदलने लगीं। 1903 से 1918 तक द्विवेदी काल माना जाता है क्योंकि 1918 से द्विवेदी युगीन काव्य वृत्तियों के विरोध में स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा आरंभ हो जाती है।

मुख्य शब्द–महावीर प्रसाद द्विवेदी, युग, साहित्य, हिन्दी, आधुनिक, भाषा, व्याकरण।

डा0 सूर्यनारायण रणसुभे अपने आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखते हैं– ''आर्यसमाज सारे हिन्दी भाषी प्रदेश में छा गया.....ब्रह्म समाज और थियोसोफिकल सोसायटी आत्मिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील थे। राष्ट्रीय कांग्रेस राजनीतिक जागरण का कार्य कर रही थी। भारतेन्दु युग के साहित्य पर इन विभिन्न आंदोलनों का प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष परिणाम बहुत कम हुआ है।''[1] पृ0.33 परन्तु 1900 आते–आते काफी बदलाव हुए– बुद्धिवाद की कसौटी पर वस्तु या व्यक्ति को कसने का प्रयत्न शुरू हुआ।''[2] पृ0.33 बीसवीं शताब्दी के आरंभ से ही चेतना का प्रतीक मनुष्य बन गया[3] मनुष्य को मनुष्य के रूप में स्थापित करने का प्रयत्न शुरू हुआ..... मनुष्य जीवन को आदर्शमय बनाने का प्रयत्न विभिन्न संस्थाए कर रही थी।''[4] बुद्धि और हृदय पक्ष के समन्वय को ही मनुष्य जीवन की आदर्श स्थिति मानी गई और प्रयत्न होने लगे।''[5] विषय वैविध्य, सरलता और उपदेशात्मकता द्विवेदी जी की प्रमुख विशेषताएं हैं। उन्होंने हिन्दी गद्य–पद्य की भाषा को एक करने के लिए प्रबल आन्दोलन चलाया, हिन्दी गद्य की अनेक विधाओं को समुन्नत किया। हिन्दी साहित्य कोश में लिखा है– ''आलोचक के रूप में रीति के स्थान पर

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

आपने उपादेयता, लोक–हित, उद्देश्य की गम्भीरता, शैली की नवीनता और निर्दोषिता को काव्योंत्कृष्टता की कसौटी पर प्रतिष्ठित किया।''[6] पृ0439 महाबीर प्रसाद द्विवेदी के कृतित्व से अधिक महिमामय उनका व्यक्तित्व है। ..... आपके विचार और कथनों के पीछे आपके व्यक्तित्व की गरिमा भी कार्य करती थी। ..... साहित्य के क्षेत्र मे सुधारवादी प्रवृत्तियों का प्रवेश नैतिक दृष्टि कोण की प्रधानता के कारण ही हो रहा था। भाषा परिमार्जन के मूलों में भी यही दृष्टिकोंण काम कर रहा था। आपका व्यक्तित्व प्राचीनता की अपेक्षा न करके भी नवीनता को प्रश्रय दिया। आप नवयुग के विधायक आचार्य थे। उस युग का बड़े से बड़ा साहित्यकार आपके प्रसाद की ही कामना करता था।''[7] पृ0.439 हिन्दी का गद्य साहित्य में डा. रामचनद्र तिवारी जी ने कहा– द्विवेदी युग में प्रायः उन सभी भावनाओं, विचारों, शैलियों एवं साहित्य–विधाओं का विकास एवं प्रसार हुआ जिसका सूत्रपात भारतेन्दु युग में हो गया था।..... .. भाषा और व्याकरण से सम्बद्ध निबंध सबसे अधिक द्विवेदी युग में ही लिखे गये।''[8] पृ077 बारहवां संस्करण 2018 द्विवेदी युग में निबन्धें के विषय अनेक होने लगे थे और जीवन से सम्बद्ध सभी छूटे विषयों को समेटा जाने लगा था। द्विवेदी जी ने सबसे बड़ा कार्य युग की मानसिकता के परिवर्तन का किया। सरस्वती के माध्यम से उन्होंने हिन्दी पाठकों को नवजागरण का संदेश दिया। उनके मानसिक क्षितिक को स्वितृत किया। उन्हे चीजों को वैज्ञानिक दृष्टि से देखने का विवेक दिया और उन सबके साथ एक ऐसी भाषा दी जिसमें नये युग को सही ढंग से व्यक्त किया जा सकता था। डा0. राम विलास शर्मा की पुस्तक महाबीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण की भूमिका में शर्मा जी लिखते हैं भाषा परिष्कार का काम व्यापक कार्यक्रम का एक अंशमात्र है और वह उसका सबसे महत्वपूर्ण अंश नहीं है,, सबसे महत्वपूर्ण अंश उनके द्वारा अर्थ–शास्त्र विषयक ग्रन्थ सम्पत्तिशास्त्र लिखा जाना है। सरस्वती के सम्पादक के रूप में शायद ही कोई ऐसा विषय हो, जिस पर उन्होंने टिप्पड़िया न लिखी हो..... कम ही उस युग के लेखक होंगे जिनको भाषा का संस्कार न दिया हो।''[9] पृ099 ''वे अर्थशास्त्री, संपादक, व्याकरण, रचनाकार ,अनुवादक सब एक साथ है'' पृ099 ''आचार्य द्विवेदी मूलतः व्यवस्थापक हैं, जो उस समय नये–नये बनते खड़ी बोली हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास की ऐतिहासिक आवश्यकता थी।''[11]पृ0.101 विविध विषयों से संबद्ध पुस्तकों की समीक्षाएं स्पष्ट ही परिचयात्मक है, पुराने संस्कृत काव्यों की उच्छवसिंत सराहना है। समकालीन साहित्यिक कृतियों का गुण दोण का विवेचन है,..... भाषा संबंधी शिथिलता का समीक्षक विशेष रूप से उल्लेख करता है..... मिश्र बंधुओं के हिन्दी नवरत्न में भाषा–संबंधी तब अनेक भूलें थी, जिनकी यथाक्रम सूची आचार्य द्विवेदी ने दी है। सैद्वान्तिक समीक्षा भी आचार्य ने लिखी।''[12] पृ0.101 कवि और कविता संबन्धी निबन्ध उल्लेखनीय है, जिसकी चर्चा शुक्ल जी ने किया है। ''अपनी पुस्तक के ''आधुनिक साहित्य'' में नंद दुलारे बाजपेयी जी ने आचार्य म0प्र0द्वि0 के योगदान का सहीं मूल्यांकन किया। साहित्य के क्षेत्र में किसी एक व्यक्ति पर इतना बड़ा उत्तर दायित्व इतिहास की शक्तियों ने कदाचित पहली बार रखा था, और पहली ही बार द्विवेदी जी ने, इस उत्तर दायित्व के सफल निर्वाह का अनुपम निदर्शन प्रस्तुत किया।''[13] पृ0.101 ''द्विवेदी जी ने जिस लगन, निष्ठान, योग्यता, और परिश्रम से सरस्वती का संपादन किया वह पत्रकारिता के इतिहास में अत्यन्त विरल है। इसे माध्यम से उन्होंने गद्य की भाषा को व्यवस्थित किया। अभी तक पद्य की भाषा ब्रजभाषा बनी हुई थी किन्तु उन्होंने गद्य की भांति पद्य की

भाषा के लिए भी खड़ी बोली को चुना, इस प्रकार गद्य–पद्य की विभाजक रेखा उन्होंने मिटाया।[14] पृ0.105 आधुनिक हिन्दी स.का.का इतिहास द्विवेदी बच्चन सिंह। द्विवेदी जी ने अनुभव किया कि रीति कालीन काव्य–वस्तु और शैली पुरानी ही नहीं पड़ गयी है, बल्कि..... जड़ हो गयी है। हिन्दी काव्य को उन्होंने उपयोगिता से सम्बद्ध किया। भारतेन्दु मण्डल के लेखकों में खड़ी बोली में जो लिखा उसमें ब्रज, भोजपुरी के शब्दों का मिश्रण ही नहीं था, बल्कि संज्ञाओं और क्रिया रूपों में भी अनेक विकृतिया थीं।.... भाषा संबधी इस अव्यवस्था को दूर करने की जो कोशिश द्विवेदी जी ने को वह साहित्य के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगी।[15] 105

महाबीर प्रसाद द्विवेदी ''युगान्तर लाने वाले साहित्यकार थे या दूसरे शब्दों में कहें, युग निर्माता थे, वे अपने चिंतन और लेखन के द्वारा हिन्दी प्रदेश में नव–जागरण पैदा करने वाले साहित्यकार थे। ..... वे पहले साहित्यकार थे जिनको आचार्य को उपाधि मिली थी, इसके पूर्व संस्कृत में आचार्यो की एक परम्परा थी, मई 1933 ई0 में नागरी प्रचारिणी सभा ने उनकी सत्तरहवीं वर्ष गांठ पर बनारस में एक बड़ा साहित्यिक आयोजन कर द्विवेदी जी का अभिनन्दन किया था एवं उनके सम्मान में द्विवेदी ने अपना वक्तव्य दिया था। वही वक्तव्य आत्म–निवेदन नाम से प्रकाशित हुआ था। इसमें उन्होंने कहा था– मुझे आचार्य की पदवीं मिली है, क्यों मिली है, मालूम नहीं, कब किसने दी है, यह भी मुझे मालूम नही, मालूम सिर्फ इतना ही है कि मै बहुधा इस पदवी से विभूषित किया जाता हूँ, शंकराचार्य, माधवचार्य..... के सदृश किसी आचार्य के चरणरज की बराबरी मै नही कर सकता,,[16] पत्रिका प्राची दिसम्बर–2016 वर्ष अंक–7 आत्म निवेदन में ही उन्होंने लिखा है– बचपन से ही मेरा अनुराग तुलसीदास की रामायण और ब्रजवासीदास के ब्रज विलास पर हो गया था, ... भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के कविवचनसुधा और गोस्वामी राधाचरण के एक मासिक पत्र ने मेरे उस अनुराग की वृद्धि कर दी, प्राची, 1889 से 1892 ई0 के बीच द्विवेदी जी की कई पुस्तकें प्रकाशित हुई। विषय–विनोद विहार–वाटिका, स्नेह माला,' रितुतरंगिनी, देवी स्तुति शतक, श्री गंगालहरी आदि। ''द्विवेदी जी स्वंय तो एक महान ज्ञान राशि थे ही उनका सम्पूर्ण वांगमय भी संचित ज्ञानराशि है, जिससे होकर गुजरना अपनी जातीय परम्परा को आत्मसात करते हुए विश्वचिन्तन के समक्ष भी होना है।'' डा. रामविलास शर्मा ने कहा कि अर्थशास्त्र के अध्ययन करने के कारण द्विवेदी जी बहुत से विषयों पर ऐसी टिप्पड़ियों लिख सके जो विशुद्ध साहित्य की सीमांए लांघ जाती हैं, ... राजनीति और अर्थशास्त्र के साथ उन्होंने आधुनिक विज्ञान का परिचय प्राप्त किया और इतिहास तथा समाजशास्त्र का अध्ययन गहराई से किया। इसके साथ भारत के प्राचीन दर्शन और विज्ञान की ओर इन्होंने ध्यान दिया और यह जानने का प्रयत्न किया कि हम अपने चिंतन में कहा आगे बढ़े हुए हैं और कहां पिछड़े है। ऐसे महान व्यक्ति का रामविलास शर्मा के पूर्व जितने भी आलोचक हुए, उन्होंने द्विवेदी जी का उचित मूल्यांकन तो नहीं किया, अपितु उनका अवमुल्यन ही किया। आ.राम.शुक्ल, नन्ददुलारे वाजपेयी, ह.प्र.द्वि. इसी श्रेणी में है।

आचार्य रा.च.शु. अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में द्विवेदी जी के विषय में निम्नबातें–''इनके लेखों में अधिकतर बातों का संग्रह है, ''नये–नये विचारों की उद्‌भावना वाले निबन्ध बहुत कम मिलते है, विचारों की वह गूढ गुंफित परंपरा उनमें नहीं मिलती जिससे पाठक की बुद्धि उत्तेजित होकर किसी नई विचार पद्धति पर दौड़ पड़े,..... द्विवेदी जी के लेखों को पढ़ने से ऐसा जान पड़ता है कि लेखक बहुत मोटी अक्ल के पाठकों के लिए लिख रहा है। यद्यपि शुक्ल जी ने यह भी कहा–'' यद्यपि द्विवेदी जी उठ न खड़े होते तो जैसा अव्यवस्थित, व्याकरण विरूद्ध और ऊटपटांग भाषा चारों ओर दिखाई पड़ती थी, उसकी परम्परा जल्द न रूकती।,, प्रेमचंद,निराला,पंत और मैथिलीशरण गुप्त ने म0प्र0द्वि के महत्व को रेखांकित किया पंत जी ने म.प्र.द्वि–पर चार पंक्ति लिखा–

''आर्य, आपके मनः स्वप्न को ले पलकों पर
भावी चिर साकार कर सके रूप–रंग भर,
दिशि–दिशि की अनुभूतिज्ञान विज्ञान निरंतर
उसे उठावें युग–युग के सुख–दुख अनश्वर''

1933 में प्रेमचंद का म.प्र.द्वि. पर हंस का विशेषांक आया संपादकीय करते हुए प्रेमचंद कहते हैं आज हम जो कुछ भी हैं, उन्ही के बनाए हुए हैं। यदि द्विवेदी जी न होते तो बेचारी हिन्दी कोसों पीछे होती। आगे प्रेमचन्द जी कहते हैं द्विवेदी जी का व्यक्तित्व बड़ा ही प्रभावशाली है, वे सच्चे युग प्रवर्तक हैं, उनमें क्रांति ले आने की विलक्षण क्षमता है हमारे लिए उन्होंने वह तपस्या की है, जो हिन्दी साहित्य की दुनिया में बेजोड़ कही जाएगी। द्विवेदी जी का जीवन साहित्य, साधना और तप का जीवन है, साहित्य की लगन का कितना ऊंचा आदर्श है, जनहित का कोई अंग उनसे नहीं छूटा, जहां कोई उपयोगी चीज देखी स्वयं आनंद लिया, पाठकों को बताया। सन् 1933 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन और इंडिया प्रेस के सहयोग से इलाहाबाद के लेखकों ने इलाहाबाद में द्विवेदी मेला का आयोजन किया था। द्विवेदी जी वेदों से संस्कृत साहित्य की जो परम्परा या इतिहास है, उस पर गवेषणात्मक, विवेचनात्मक एवं आलोचनात्मक दृष्टि से विचार किये हैं, वे संस्कृत साहित्य के महत्व पर विस्तार से विचार करते हुए बताते हैं कि संस्कृत साहित्य विस्तृत एवं विविध आयामी है।,, उन्होंने रघुवंश, कुमार संभव, मेघदूत, किरातार्जुनीय का गहन अध्यन किया। उन्होंने वेदों में व्याप्त–रूढ़ियों वाले दृष्टिकोण का विरोध व सुधार किया। ''द्विवेदी जी वैदिक मान्यताओं का खण्डन करने एवं उनकी कुरीतियों को दर्शाने के लिए ही––प्रसंगों की पुनर्रचना करते हैं। पंडित महाबीर प्रसाद द्विवेदी स्पष्टवादिता से भरे हुए––नयी प्रेरणा देने वाले गम्भीर साहित्य के निर्माण में बहुत सहायता पहुंचाई'' द्विवेदी जी का स्पष्ट मत था कि ''वेद पूजा–पाठ करने की चींज नहीं है, बल्कि ऐतिकासिक महत्व के ग्रन्थ हैं, वेदों का अध्ययन हमें अवश्य करना चाहिए,, वैदिक समय में भारतवासियों की सामाजिक अवस्था कैसी थी, वे किस तरह अपना जीवन निर्वाह करते थे, कहां रहते थे, वेदों में ही मिल सकता है। द्विवेदी जी के अनुसार सहीं भाषा लिखनी तक नहीं आती और इधर–उधर से जोड़ बटोरकर यानी सामग्री जुटाकर लोग लेखक बन जाते हैं, वे ऐसे लेखक हैं

जो किसी आलोचक की दहलीज पर सिर रगड़ कर अपनी पुस्तक की आलोचना लिखवाते है। द्विवेदी जी का मानना था कि यदि हमें जीवित रहना हैं और सभ्यता की दौड़ में अन्य जातियों की बराबरी करना है तो श्रमपूर्वक बड़े उत्साह से सत्साहित्य का उत्पादन और प्राचीन साहित्य की रक्षा करनी चाहिए। द्विवेदी जी ने हिन्दी भाषा की अनस्थिरता को दूर करने के लिए अपना ऐतिहासिक महत्व का निबन्ध भाषा और व्याकरण नवम्बर–1905 की सरस्वती में लिखा,। म0 प्र0 द्वि0 एक ऐसा व्यक्तित्व जिसका विवेचन व मूल्यांकन किसी एक लेख से नहीं किया जा सकता केवल उनके रूप रेखा की झलक मिल सकती हैं। उसी का स्तुत्य प्रयास यहां हुआ हैं।

सन्दर्भ –

1. डा. सूर्य नारायण रण सुभे– आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास संस्करण 2005 पृ0.33
2. डा. सूर्य नारायण रण सुभे– आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास संस्करण 2005 पृ0.33
3. डा. सूर्य नारायण रण सुभे– आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास संस्करण 2005 पृ0.30
4. डा. सूर्य नारायण रण सुभे– आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास संस्करण 2005 पृ0.33
5. डा. सूर्य नारायण रण सुभे– आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास संस्करण 2005 पृ0.33
6. हिन्दी साहित्य कोश सं0– धीरेन्द्र वर्मा–संस्करण 2002 .....पृ.439
7. हिन्दी साहित्य कोश सं0– धीरेन्द्र वर्मा–संस्करण 2002 .....पृ.439
8. हिन्दी का गद्य साहित्य– धीरेन्द्र वर्मा–संस्करण 2002 –पृ.77
9. हिन्दी साहित्य संवेदना का विकास डा. रामस्वरूप चतुर्वेदी–संस्करण 2002– पृ099
10. हिन्दी साहित्य संवेदना का विकास डा. रामस्वरूप चतुर्वेदी–संस्करण 2002–पृ0.101
11. हिन्दी साहित्य संवेदना का विकास डा. रामस्वरूप चतुर्वेदी–संस्करण 2002–पृ0.101
12. हिन्दी साहित्य संवेदना का विकास डा. रामस्वरूप चतुर्वेदी–संस्करण–2002 पृ0.101
13. हिन्दी साहित्य संवेदना का विकास डा. रामस्वरूप चतुर्वेदी–संस्करण– 2002पृ0.101
14. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास बच्चन सिंह–संस्करण 2003– पृ0.103
15. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास बच्चन सिंह–संस्करण 2003 – पृ0.103
16. प्राची पत्रिका दिसम्बर–2016 वर्ष–अंक–7